ISSN - 2394-2266

धर्माबाद शिक्षण संस्था, धर्माबाद द्वारा संचलित

# लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

धर्माबाद, जि. नांदेड (महा.)

( नॅक पुनर्मूल्यांकन 2.87 CGPA के साथ 'B' मानांकन )

तथा

## महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के संयुक्त तत्त्वावधान में

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २५ वाँ (रजत महोत्सवी) अधिवेशन

# सार्थक उपलब्धि

# २१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध

२२-२३ दिसंबर, २०१७

संपादक
डॉ. मधुकर खराटे

अतिथि संपादक
डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार

Scanned with CamScanner

# अनुक्रमणिका


| अ.क्र. | शीर्षक | संशोधक | पृ.क्र. |
|---|---|---|---|
| 1) | समकालीन हिंदी ग़ज़लों में महानगरीय परिदृश्य | डॉ. मधुकर खराटे | 1 |
| 2) | अरुण कमल की कविता में चित्रित महानगरीय सामाजिक यथार्थ | डॉ. प्रिया ए. | 5 |
| 3) | 21 वीं सदी के काव्य में महानगरीय मानवीय संवेदना | डॉ.वी. पार्वती | 8 |
| 4) | 21 वीं सदी के हिंदी ग़ज़लों में व्यक्त महानगरीय बोध | प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी | 11 |
| 5) | इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता | डॉ. कांचनमाला बाहेती | 14 |
| 6) | 21 वीं शताब्दी के हिन्दी काव्य साहित्य में महानगरीय बोध स्त्री-चिन्तन के संदर्भ में | डॉ. पवन कुमार | 17 |
| 7) | विराट के काव्य में महानगरीय बोध | प्रा. डॉ. कामिनी तिवारी | 22 |
| 8) | डॉ. दामोदर खडसे जी के काव्य में महानगरीय बोध | डॉ. संजयकुमार नं. शर्मा | 26 |
| 9) | इक्कीसवी सदी की हिंदी कविता में महानगरीय बोध | डॉ. सहदेव वर्षाराणी | 29 |
| 10) | इक्कीसवी सदी की कविताओं में व्यक्त महानगरीय बोध | डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे | 32 |
| 11) | हिंदी काव्य में महानगरीय बोध | डॉ. अशोक तुकाराम जाधव | 37 |
| 12) | 21 वीं सदी की कविता में महानगरीय जीवन की अभिव्यक्ति | प्रा.डॉ. दिग्विजय टेंगसे | 39 |
| 13) | डॉ. कुँअर बेचैन की गजलों में चित्रित महानगरीय बोध | प्रा.डॉ.अविनाश कासांडे | 44 |
| 14) | इक्कीसवीं सदी की कविता और महानगरीय जीवन | डॉ. सुरडकर दिनकर तुकाराम | 46 |
| 15) | इक्कीसवी शताब्दी के हिंदी कविता साहित्य में महानगरीय बोध | प्रा.डॉ.बळीराम भुक्तरे<br>पाटील प्रशांत प्रकाशराव | 48 |
| 16) | समकालीन गज़लों में अभिव्यक्त महानगरीय बोध | डॉ. सुनील बी .कुलकर्णी<br>डॉ. प्रीति सोनी | 51 |
| 17) | महानगरीय बोध और 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता | डॉ.पाटील प्रणिता लक्ष्मणराव | 53 |
| 18) | प्रभा खेतान के काव्य में चित्रित महानगरीय जीवन | प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा | 55 |
| 19) | राजेश जोशी की कविता में महानगरीय बोध (विशेष काव्यसंग्रह - 'चाँद की वर्तनी') | प्रा. एम.एम. शिवशेट्टे | 63 |
| 20) | समकालीन हिन्दी कविताओं में चित्रित महानगरीय बोध (चयनित कविताओं के विशेष संदर्भ में) | शेख हीना अन्वर | 66 |
| 21) | हिंदी कथा-साहित्य में 'महानगरीय' प्रवृत्तियों का क्रमिक विकास | डॉ. राहुल मिश्र | 69 |
| 22) | महानगरीय कथा साहित्य में स्त्री | डॉ. विजयकुमार राऊत | 72 |
| 23) | गोविंद मिश्र के कथा-साहित्य में वर्णित महानगरीय बोध | प्रा. विजय एकनाथ सोनजे | 74 |
| 24) | 21 वीं सदी के उपन्यास एवं कहानी साहित्य में महानगरीय बोध | स्मिता कल्याणराव चालिकवार | 77 |
| 25) | 21वी शताब्दी के कथासाहित्य में महानगरीय बोध | इम्रानखान मुन्सबखान | 78 |
| 26) | 'वे दिन' में चित्रित महानगरीय जीवन | डॉ. काकानि श्रीकृष्ण | 79 |
| 27) | नासिरा शर्मा के उपन्यास में शहरीकरण | डॉ. बी. प्रवीणाबाई<br>टी. गोदावरी | 82 |
| 28) | 21 वीं सदी का हिंदी उपन्यास लेखन और महानगरीय बोध | डॉ. संदीप रणभिरकर | 84 |
| 29) | महानगरीय बोध और हिंदी उपन्यास | प्रा.डॉ. अनिता नेरे (भामरे) | 89 |
| 30) | 'काँच घर' में महानगरीय जीवन | डॉ. अनिल साळुंखे | 91 |
| 31) | 'अन्तर्वंशी' उपन्यास में चित्रित महानगरीय दाम्पत्य जीवन का बदलता परिवेश | डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव | 93 |
| 32) | महानगरीय जीवन का यथार्थबोध : एक जमीन अपनी | डॉ. राजेंद्र रोटे,<br>डॉ. कल्पना गंगातीकर | 95 |




Scanned with CamScanner

# प्रभा खेतान के काव्य में चित्रित महानगरीय जीवन

प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में औद्योगिकीकरण उन्नति के एवं भौतिक विकास के साथ महानगरों का विकास हुआ हैं। परंतु इस विकास के साथ महानगरों में कई समस्याएँ भी निर्माण हुई हैं। उपजीविका प्राप्त करने हेतु लोगों का ग्रामीण क्षेत्र से शहर की ओर अत्यधिक संख्या में स्थलांतरण होने लगा हैं। इसका एक परिणाम यह हुआ कि महानगरीय जीवन में विसंगतियाँ, विद्रुपताओं व्याप्त होने लगी। यांत्रिकता, खोखलापन, आडम्बर, मुखौटे, तनाव, एकाकीपन, शोषण, महानगरीय जीवन की विशेषताएँ हैं। इसी के संदर्भ में डॉ. अनिलकुमार शर्मा लिखते हैं कि, ``आज हो रहे मानव-मूल्यों के पतन में महानगरीय सभ्यता का पूरा-पूरा हाथ हैं। छल, प्रपंच, स्वार्थ, विश्वासघात तथा मानसिक तनाव के कीटाणू महानगरीय वातावरण में जन्मते और पलते हैं।``[1]

महानगर दूषित वातावरण, गंदगी, प्रदूषण, नागरिक सुविधाओं का अभाव आदि समस्याओं से ग्रस्त हो गया हैं। इसी के स्वार्थपरकता, भ्रष्टाचार, राजनीति की विसंगतियाँ, आतंक, दहशत, दिखावापन और नारी शोषण आदि अनेकानेक प्रवृत्तियाँ महानगरीय जीवन में परिलक्षित होने लगी। इसी के संदर्भ में डॉ. कौशल नन्दन गोस्वामी लिखते हैं कि, ``महानगर विराटता का द्योतक ही नहीं वरन एक ऐसा महासागर है जिसमें बहुरूपी मानवों की भाव-विचारों की बहुरंगी, भौतिक सुखों की रंगीनियत पूर्ण पर्वत श्रृंखलाएँ तथा त्रासदियों के दुखद लघु-बृहद जन्तु समाहित हैं।....इन्हीं महानगरों से जुड़े, इनको निकट से देखने-परखने वाले भुक्तभोगी कवियों की अन्तश्चेतना महानगरीय जीवन की त्रासदियों, विसंगतियों, आतंक, दहशत, दिखावापन और नारी शोषण आदि अनेकानेक प्रवृत्तियाँ महानगरीय जीवन की त्रासदियों, विसंगतियों और विद्रुपताओं से झंकृत हो उठी।``[2]

आज स्थिति यह है कि महानगर अपनी जनसंख्या वृध्दि के कारण चिंतित है। जिस गति से महानगरीय जनसंख्या बढ़ रही हैं। उस गति से सुख-सुविधाओं की व्यवस्था नहीं हो सकी है। इन सभी समस्याओं, स्थितियों को प्रभा खेतान ने अपने काव्य संग्रह की कविताओं में अभिव्यक्त किया हैं।

महानगरों में केवल भीड़ है। इसलिए यहाँ कोई अकेला नहीं हैं। नगरों एवं महानगरों में मध्यवर्गीय अपना भविष्य बनाने के लिए गाँव से सीधे नगरों की ओर स्थलांतरित हो रहे हैं। अतएव यहाँ भीड़ में भी कोई


ISSN : 2394-2266

Scanned with CamScanner

अपने-आपको अकेला महसूस नहीं करता। क्योंकि इस स्थिति में नगरों में रहकर अपने आपके बारे में सोचने का समय ही नहीं मिलता। 'अपरिचित उजाले' इस काव्य संग्रह की कविता 'बंद कमरे में' में प्रभा लिखती हैं कि,

**भीड़ के साथ रास्ता पार करना**
**मुझे अकेला नहीं करता।**
**बहुत से लोग हैं,**
**इस महानगर में, जो मेरी ही तरह**
**अपने को बाँटते है**
**रेस्तराँ और दुकानों में**
**सिनेमाघर की लंबी कतारों में**
**या कभी**
**पार्कों में पड़ी खाली बेंचों पर**
**ऊबकर।**[3]

नगरों में भारी मात्रा में आबादी बढ़ने के कारण शहर में रहनेवाले लोगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। चारों ओर गंदगी दिखाई देती हैं। वातावरण की हवा में डीजल की मिली-जुली गंध के कारण बदबू हर जगह छायी रहती हैं। धन के पीछे महानगर का हर एक आदमी बेतहाशा दौड रहा हैं। ऐसा लगता है मानों महानगर के किसी भी व्यक्ति को शांति नहीं मिलती। वह जीवन के भविष्य में सुख-शांति पाने की आस लगाए शहर की ओर बढ़ता हैं। वह उसे भाग-दौड़ भरी दुनिया में कभी हासिल नहीं हुई हैं। 'बहुत मुश्किल हैं' इस कविता से प्रभा लिखती हैं कि,

**हवा में डीजल की**
**मिली-जुली गंध**
**और झूमते हुए पेड के नीचे**
**कूड़े का ढेर।**[4]

महानगरों में चाहे पुरूष हो या नारी हो सभी लगे हैं। अपने-अपने भविष्य को अधिक उज्ज्वल बनाने में लगे हैं। परंतु नगरों में स्त्रियाँ आये दिन मन में डर लिए ऑफिस में काम पर जाती हैं। ऑफिस से बस स्टॉप और फिर घर तक अनचाहे ड़र को महसूस करती हुई जीवन जीती हैं। महानगरों की भीड़ में, शहर के वातावरण में गर्मी, पसीने की बदबू को वह सहती है। बल्कि शहर में सम्प्रति, नारी पर अत्याचार, अन्याय और बलात्कार जैसी घटना घटित होती हैं। इसलिए वह भय के साथ यात्रा करते हुए असुरक्षा का भाव मन में रखती हैं। 'बस स्टॉप पर' इस कविता में प्रभा लिखती हैं कि,

**सुनो ! आज दास्ता न बोझिल था, न लम्बा**
**भीड़ की गर्मी, पसीने की बदक**


ISSN : 2394-2266
Scanned with CamScanner

पास बैठे आदमी का बेहुदा दबाव
कहीं कुछ भी नहीं था। [5]

महानगर में जीवन की कोई वैधता नहीं होती, शाम को व्यक्ति घर पहुँचेगा या नहीं यह कोई नहीं कह सकता। क्योंकि गैंगवार, खून, दुर्घटनाएँ, बम विस्फोट, राजनीतिक आंदोलन, दंगे-फसाद आदि कई घटनाएँ आये दिन महानगरों में होती रहती हैं। विदेश से आए हुए आतंकवादी एवं दहशतवादी भी बड़े-बड़े शहरों में ही बारूद के गोले फेंककर आतंक फैलाना चाहते हैं। इस तरह का जीवन जीने के लिए महानगर का व्यक्ति विवश है, अब धीरे-धीरे अपने आपको बचाते हुए जीवन जीने की उसे आदत सी हो गयी है। 'वे लोग। बड़ी दूर तक' इस कविता में प्रभा लिखती हैं कि,

भागते चले गये -
उनकी भौंहें तनी थीं
मुट्ठियाँ भिंची थी
अगल-बगल सब मकानों पर
बारूद के गोले
फेंकते जा रहे थे। [6]

निम्नवर्गीय शहरों में बंजारों की बस्ती में रहते हैं। उनकी हर-एक सुबह का प्रारंभ उदासी के साथ होता है। वे अपनी आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उच्च एवं मध्यवर्गीय लोगों के यहाँ दिन-रात काम करते रहते हैं। इस स्थिति में उनका हर पल शोषण होता रहता हैं। शहरों में स्नेह, अपनापन और आत्मीयता का अभाव हैं। 'सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं' इस काव्य संग्रह की कविता 'एक उदास सुबह' दृष्टव्य है -

जगे हो
इसी क्षण, मेरे ही साथ
शहरों के उदास पीले चेहरे
और बंजारों की झोली में
न मालूम हमारी
कितनी खुशियाँ छिपी हुई हैं। [7]

नगरों में औद्योगिकरण की स्पर्धा चल रही हैं। इस स्पर्धा में औद्योगिकरण के विकास के लिए बड़ी-बड़ी कंपनियों के मालिक अपनी कंपनी में बनी नई वस्तुओं का विज्ञापन कर प्रचार-प्रसार करने में लगे हैं। इस आधुनिकीकरण में लोगों को अपनी कंपनी की वस्तुओं को खरीदने लिए। कंपनी आधुनिक नारी को विज्ञापन के क्षेत्र में उतारकर उनकी देह पर नई-नई वस्तु को पहनाकर विज्ञापन करती रहती हैं। इस स्थिति में नारी बड़ी विवश हैं। 'नियति' कविता में प्रभा लिखती हैं कि,


ISSN : 2394-2266
Scanned with CamScanner

इतिहास और परम्परा से मुक्त
बिलकुल ताजा
नई-नई रेशमी साड़ी पहन
वह टंग गयी
आधुनिकता के हैंगर पर।[8]

कामकाजी स्त्रियों को ऑफिस से घर लौटते हुए शाम के अँधकार में निकलना पड़ता हैं। किसी को अकेला देख सीढ़ियों के नीचे अँधेरे में हाथ में एक तेज चाकू लिये आदमी को देख वह असुरक्षितता का अनुभव करती हैं। वह ईश्वर से प्रार्थना करती हैं। शहरों में दिन-ब-दिन गैंगवार, खून, लूटमार, दंगे-फसाद आदि कई घटनाएँ घटित होती हैं। इस तरह का जीवन जीने के लिए महानगर की नारी विवश हैं। 'अँधेरा खड़ा है' इस कविता दृष्टव्य है -

सीढ़ियों के नीचे अँधेरा
हाथ में एक तेज चाकू लिये
खड़ा है...
और मैं काँपकर
उतरते हुए
प्रार्थना करती हूँ
तुमसे....ओ मेरे प्रभू।[9]

नगरों में हर एक व्यक्ति अपनी-अपनी जरूरत को ध्यान में रखते हुए घर से निकलता हैं। शहर की भीड़ में वह किस बसों, ट्रामों के तीखे शोर के साथ अपने-अपने काम जाने के लिए भाग-दौड करता हैं। शहरों में लोगों के रिश्ते-नाते, पारस्परिक संबंध, मानवीय संबंध सब सिमटते जा रहे हैं। सुबह से शाम होने तक अपनी स्वयं की जरूरत को पूरा करते-करते वे लोग थक जाते हैं। इसलिए शहर में रहनेवाले लोगों में केवल स्वार्थ भाव ही दिखाई देता हैं -

अपनी-अपनी
व्यक्तिगत जरूरत
भीड़ का हर टुकडा
रेल की सीढ़ियों
बसों, ट्रामों के तीखे शोर के
साथ
अपने-अपने काम पर
दौड जाता है।[10]

कामकाजी नारी के लिए सप्ताह में एक दिन अवकाश मिलता है। अन्य दिन भाग-दौड़ करते कामकाज में बीत जाते हैं। नारी अपने व्यक्तिगत जीवन के रिश्ते-नातों, पारिवारिक संबंध, मानवीय संबंधों को बंद


ISSN : 2394-2266
Scanned with CamScanner

अलमारी में रख देती हैं। जब कामकाज से एक दिन के लिए राहत मिलती है तो वह उन्हें अलमारी से निकाल धूप दिखाना चाहती हैं। उस दिन घर की साफ-सफाई, कपड़ों को धूप दिखाना, पारिवारिक संबंधियों से मिलना आदि कार्य किये जाते है -

आज छुट्टी का दिन है
तह किये रिश्तों को
अलमारी से निकाल
धूप दिखानी है,
मनमुटाव की सलवटों पर
फिर से लोहा करना है। [11]

महानगरीय जीवन जीनेवाले लोगों में एक साथ काम करने का मिलमिला ऑफिस में चलता रहता है। किसी कारणवश छुट्टी हो या किसी के यहाँ जन्मदिन, नववर्ष, सफलता, परिवार की खुशियाँ आदि में ऑफिस के लोग अपने साथ काम करनेवाले परिचित गण के यहाँ जाकर पार्टी में शामिल हो जाते हैं। पाश्चात्य संस्कृति के यहाँ से आयी हुई परंपरा को वे अपनाते हैं। इसलिए वे कार्यक्रम में शराब पीना, सिगरेटों का धुआँ उड़ाना और ग़ज़ल सुनने का आनंद लेते हैं। परिचित गण के यहाँ शाम को देर रात तक बने रहते है और अंत में अपने-अपने घर लौट जाते हैं -

पर जब रात गये
बुझी हुई सिगरेटों के साथ
आखिरी ग़ज़ल भी खत्म हो
सारे दोस्त लौट जायें
अपने अपने घरों में। [12]

आधुनिकीकरण के कारण नगर-महानगरों में रास्ता का जाल फैला है। मकानों की अधिकता है, मछली बाजार का शोरगुल है। चारों ओर कूड़े के ढेर है, अस्वच्छता हैं और दिन भर के परिश्रम से थका हुआ व्यक्ति है -

सेटेलाइट की ऊँचाईयों से
क्या चिड़िया देख पाती होगी
मेरे शहर का रास्ता
मकानों की छतें
मछली बाजार
कूड़े का ढेर
घिसटते हुए थके
हजारों लाखों पैर ? [13]


ISSN : 2394-2266

Scanned with CamScanner

महानगरों की बढ़ती हुई समस्या को देख नारी शहरों में अकेली नहीं रहना चाहती। वह भीड़ में शामिल होकर दौड़नेवाली मिनी बस में बैठकर इस कोने से उस कोने तक जाना चाहती हैं। भीड़ में सबसे परिचित-अपरिचित लोगों से बातें करते हुए रहना चाहती हैं। वह अपनी कामकाज की थकान को भूलाने के लिए यह सब करना चाहती हैं। एक चमकती हुई धूप को महसूस करना चाहती हैं। अपने चेहरे पर एक उजली हँसी लाना चाहती हैं। 'कृष्णधर्मा मैं' इस काव्य संग्रह में प्रभा लिखती हैं -

**दौड़ने वाली मिनी बस**
**इस कोने से उस कोने तक**
**जाती हुई**
**परिचितों-अपरिचितों से बाते करती हुई**
**हो जाना चाहती हूँ मैं**
**चमकती हुई धूप, उजली हँसी।** [14]

महानगरों में लोगों को कुछ देर के लिए सुख-शांति मिले। इसलिए बाग-बगीचे बनाए गये हैं। उन जगह पर भी लोगों की भीड़ दिन-ब-दिन बढ़ने लगी हैं। उन जगह पर गाड़ियों की लंबी-लंबी कतारे, पंख उछालती तितलियाँ भी इस भीड़ से बचती हुई संभल संभलकर फूलों और पत्तों पर चल रही हैं। उड़ते हुए भौरे भी डालियों से छन-छनकर सूरज की किरणों के साथ उतरते जाते हैं। लोगों की इस स्थिति में भी कुछ पल के लिए शांति मिलती हैं। पर फिर से वही भाग-दौड़भरी जिंदगी की शुरूवात हो जाती हैं। 'हुस्नाबानों और अन्य कविताएँ' इस काव्य संग्रह की कविता 'हुस्नाबानों' में प्रभा लिखती हैं,

**विक्टोरिया का मैदान**
**घूमते हुए लोग**
**गाडियों की कतारें**
**पंख उछालती तितलियाँ**
**फूलों पर पत्तों पर**
**सम्हल-सम्हल कर**
**चल रही किरणें**
**उड़ते हुए भौरे**
**डालियों से छन-छनकर**
**उतरती हुई धूप।** [15]

महानगरों में बढ़ती हुई समस्या के साथ परिवारों में आत्महत्या, खून, नारी का मानसिक एवं शारीरिक शोषण, बढ़ रहा हैं। फलस्वरूप नारी आत्महत्या कर रही है या दहेज कम लाने, आर्थिक दयनीय स्थिति के कारण वह जला दी जाती है। यह स्थिति भारतीय परिवारों में कई बार दिखाई देती है। महानगरीय जीवन में स्त्री की उपेक्षा, उसका मानसिक एवं शारीरिक छल को उभारते हुए प्रभा जी लिखती है -

Scanned with CamScanner

बगल के फ्लैट वाली दुल्हन
मर गई छिड़क कर
अपने ही ऊपर
किरासन तेल
लोग कहते सास ने जला दिया
लोग कहते निकम्मा था
उसका मरद। [16]

महानगरों में गाँव से शहर की ओर प्रतिदिन लोगों की आने की संख्या बढ़ रही है, फलस्वरूप महानगरों जनसंख्या बढ़ रही हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि गाडियों का धुआँ, गंदगी, कुड़े-कचरे का ढेर बढ़ रहा हैं। इस कारण शहर में प्रदूषण बढ़ रहा हैं। नगरीय लोगों का स्वास्थ्य एक प्रश्नचिन्ह बन गया है। 'भीड़ के बीच' इस कविता में प्रभा लिखती हैं कि,

**शहर ने ओढ़ रखा है**
**धुँए का मुखौटा**
**फेंफड़ों को**
**कर दिया है बंद**
**बड़े मर्तबान में।** [17]

नगरों की बढ़ती हुई आबादी के कारण शहरों में कई समस्याएँ उभरकर सामने आने लगी हैं। देश के नगरों को नुकसान पहुँचाने के लिए आस-पड़ोस के देश के लोग अपनी आतंक का कहर शहरों पर बरसाते हुए, शहर की चौराहे, मिनी बस, चलती हुई ट्रामों आदि कई जगह पर बम-धमाके करने लगे हैं। 'मनोरंजन' इस कविता में प्रभा लिखती हैं कि,

**चौराहे पर**
**धमाके के साथ फटा**
**मिनी बस का टायर**
**चलती ट्राम पर।** [18]

प्रभा खेतान के काव्य संग्रह की कविताओं में महानगरीय जीवन की समस्याओं में महानगर की भीड़ में फँसे लोग, उनकी संवेदनहीनता, वहाँ का वातावरण, अपराधीकरण, खत्म होना अपनापन, बढ़ती हुई महँगाई, बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार, बढ़ता हुआ आतंकवाद आदि कई समस्याओं का चित्रण किया हैं।

महानगरीय जीवन की समस्याओं में महानगर की भीड़, लोगों की संवेदनहीनता, महानगर का वातावरण, महानगर की पनपनेवाली आधुनिक सभ्यता, अपराधीकरण, अपनत्व का अभाव, बढ़ती हुई महँगाई, बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार, आतंकवाद में आदि कई समस्याओं का अंकन हुआ हैं। आम आदमी के प्रति कवयित्री की


ISSN : 2394-2266
Scanned with CamScanner

संवेदनशीलता रही है। इसीलिए प्रभा खेतान ने महानगरीय जीवन के चक्र में फँसे आम आदमी की विवशता के चित्रण अपनी कविता में बड़े मार्मिक ढंग के साथ किया है।

## संदर्भ :


1) साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल : डॉ. शिवनारायण अग्रवाल का योगदान - डॉ. अनिल कुमार शर्मा, पृ. 94-95
2) नवें दशक की हिंदी कविता - संपा. डॉ. धर्मेन्द्र तिवारी, पृ. 187
3) अपरिचित उजाले - प्रभा खेतान, पृ. 12
4) वही, पृ. 19
5) वही, पृ. 20
6) वही, पृ. 30
7) सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं - प्रभा खेतान, पृ. 14
8) वही, पृ. 26
9) वही, पृ. 67
10) वही, पृ. 69
11) एक और आकाश की खोज में - प्रभा खेतान, पृ. 15
12) वही, पृ. 18
13) वही, पृ. 22
14) कृष्णधर्मा मैं - प्रभा खेतान, पृ. 13
15) हुस्नाबानों और अन्य कविताएँ - प्रभा खेतान, पृ. 9
16) वही, पृ. 19
17) वही, पृ. 29
18) वही, पृ. 49


Scanned with CamScanner